आर्थिक क्रिया

- मानव के वो क्रियाकलाप जिनसे आय प्राप्त होती है, उन्हें आर्थिक क्रिया कहा जाता है।



प्राथमिक क्रियाएँ

- प्राथमिक क्रियाएँ प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण पर निर्भर है, क्योंकि ये पृथ्वी के संसाधनों जैसे - भूमि, जल, वनस्पति, भवन निर्माण सामग्री एवं खनिजों के उपयोग के विषय में बतलाती हैं।
- प्राथमिक कार्यकलाप करने वाले लोग उनका कार्य क्षेत्र घर से बाहर होने के कारण लाल कॉलर श्रमिक कहलाते हैं।

प्रमुख प्राथमिक क्रियाएँ

- आखेट
- भोजन संग्रह
- पशुचारण
- मछली पकड़ना
- कृषि
- खनन
- वनों से लकड़ी काटना

आखेट एवं भोजन संग्रह

- मानव सभ्यता के आरंभिक युग में आदिमकालीन मानव अपने जीवन निर्वाह के लिए अपने समीप के वातावरण पर निर्भर रहता था।





LET'S LEARN TOGETHER

जीवन-निर्वाह के कार्य

(क) पशुओं का आखेट करना और

(ख) अपने समीप के जंगलों से खाने योग्य जंगली पौधे एवं कंद-मूल आदि को एकत्रित करना।

आखेट एवं भोजन संग्रह की विशेषताएँ

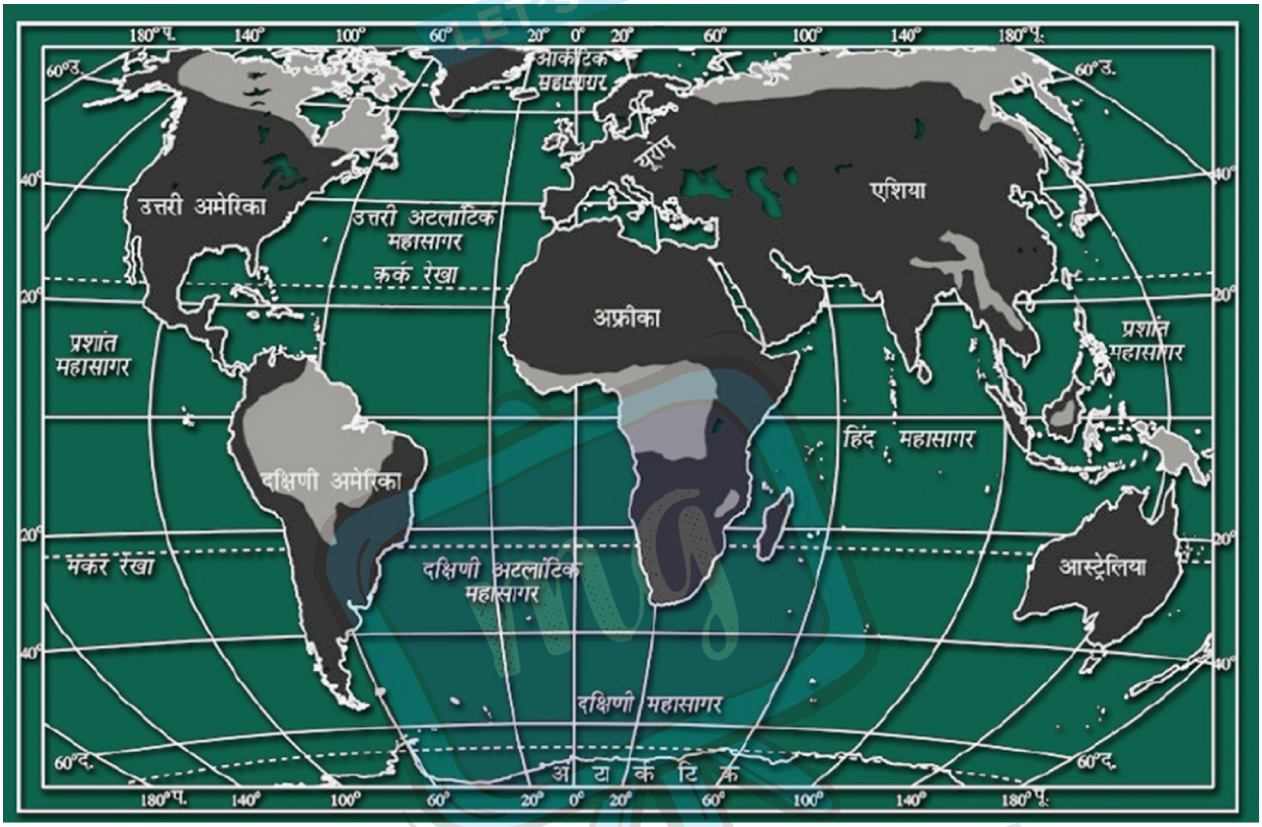
- भोजन संग्रह एवं आखेट प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाएँ हैं।
- अतिशीत एवं अत्यधिक गर्म प्रदेशों के रहने वाले लोग आखेट द्वारा जीवन-यापन करते थे।
- ये लोग अपने भोजन, वस्त्र एवं शरण की आवश्यकता की पूर्ति हेतु पशुओं एवं वनस्पति का संग्रह करते हैं। इस कार्य के लिए बहुत कम पूँजी एवं निम्न स्तरीय तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है।

LET'S LEARN TOGETHER

विश्व के भोजन संग्रह क्षेत्र

(i) उच्च अक्षांश के क्षेत्र- उत्तरी कनाडा, उत्तरी यूरेशिया एवं दक्षिणी चिली।

(ii) निम्न अक्षांश के क्षेत्र- अमेजन बेसिन, उष्णकटिबंधीय अफ्रीका, आस्ट्रेलिया एवं दक्षिणी पूर्वी एशिया का आंतरिक प्रदेश।



LET'S LEARN TOGETHER

- आधुनिक समय में भोजन संग्रह के कार्य का कुछ भागों में व्यापारीकरण भी हो गया है।
- उदाहरण-
  - छाल का उपयोग - कुनैन, चमड़ा एवं कार्क।
  - पत्तियों का उपयोग- पेय पदार्थ, दवाइयाँ एवं कांतिवर्द्धक वस्तुएँ ।
  - रेशे का उपयोग - कपड़ा बनाना।
  - तने का उपयोग- रबड़, गोंद व राल बनाना।

पशुचारण

- भौगोलिक कारकों एवं तकनीकी विकास के आधार पर वर्तमान समय में पशुपालन व्यवसाय निर्वहन अथवा व्यापारिक स्तर पर किया जाता है।
- पशुचारण के प्रकार

1- चलवासी पशुचारण

2- वाणिज्य पशुधन पालन

LET'S LEARN TOGETHER

चलवासी पशुचारण



- चलवासी पशुचारण एक प्राचीन जीवन-निर्वाह व्यवसाय रहा है जिसमें पशुचारक अपने भोजन, वस्त्र, शरण, औजार एवं यातायात के लिए पशुओं पर ही निर्भर रहता था।
- वे अपने पालतू पशुओं के साथ पानी एवं चरागाह की उपलब्धता एवं गुणवत्ता के अनुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते रहते थे। इन पशुचारक वर्गों के अपने-अपने निश्चित चरागाह क्षेत्र होते थे।

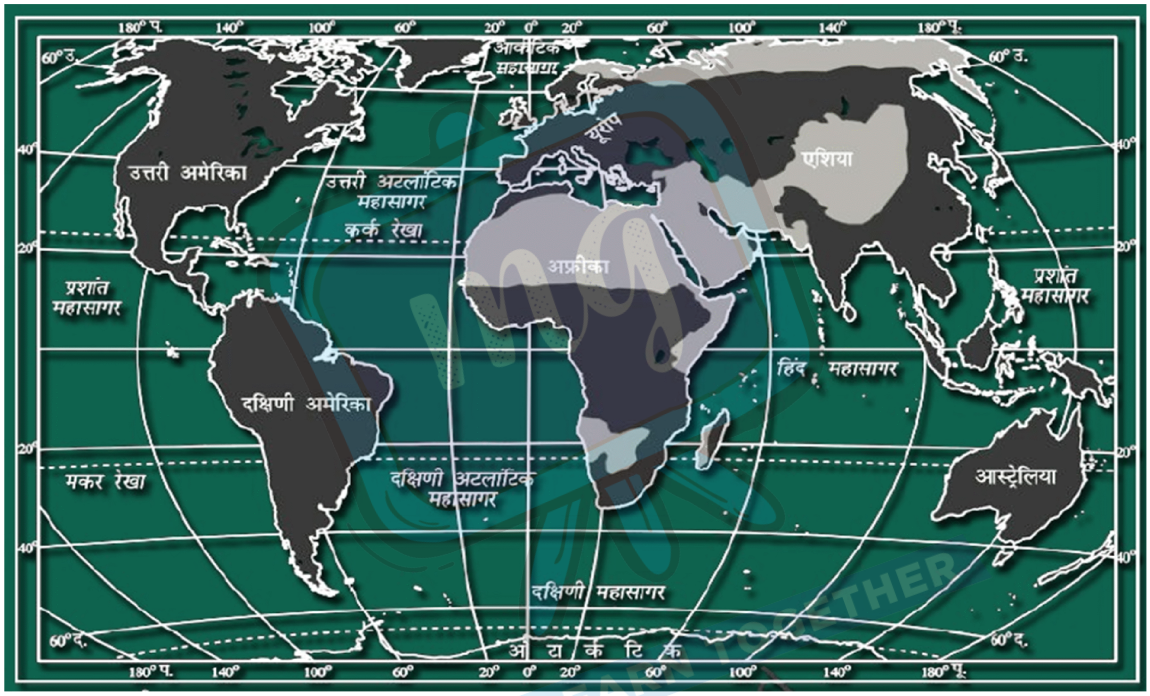
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख पशु

- उष्णकटिबंधीय अफ्रीका → गाय-बैल।
- सहारा एवं एशिया के मरुस्थल → भेड़, बकरी एवं ऊँट।
- तिब्बत एवं एंडीज के पर्वतीय भाग → याॅक व लामा।
- आर्कटिक और उप उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र → रैंडियर।

चलवासी पशुचारण के प्रमुख क्षेत्र

- उत्तरी अफ्रीका के एटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप होता हुआ मंगोलिया एवं मध्य चीन तक।
- दूसरा क्षेत्र यूरोप तथा एशिया के टुंड्रा प्रदेश।
- तीसरा क्षेत्र दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका एवं मेडागास्कर द्वीप।



प्रमुख विशेषताएँ

- नए चरागाहों की खोज में ये पशुचारक समतल भागों एवं पवर्तीय क्षेत्रें में लंबी दूरियाँ तय करते हैं।
- गर्मियों में मैदानी भाग से पर्वतीय चरागाह की ओर एवं शीत में पर्वतीय भाग से मैदानी चरागाहों की ओर प्रवास करते हैं।
- इनकी इस गतिविधि को ऋतुप्रवास कहा जाता हैं।
- भारत में हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रें में गुज्जर, बकरवाल, गद्दी एवं भूटिया लोगों के समूह ग्रीष्मकाल में मैदानी क्षेत्रें से पर्वतीय क्षेत्रें में चले जाते हैं एवं शीतकाल में पर्वतीय क्षेत्रें से मैदानी क्षेत्र में आ जाते हैं।
- इसी प्रकार टुंड्रा प्रदेश में ग्रीष्म काल में दक्षिण से उत्तर की ओर एवं शीत में उत्तर से दक्षिण की ओर चलवासी पशुचारकों का पशुओं के साथ प्रवास होता हैं।

चलवासी पशुचारकों की संख्या में कमी के कारण

- राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण
- कई देशों द्वारा नई बस्तियों की योजना बनाना।

LET'S LEARN TOGETHER

वाणिज्य पशुधन पालन



Download MISSION GYAN App Now from Play Store

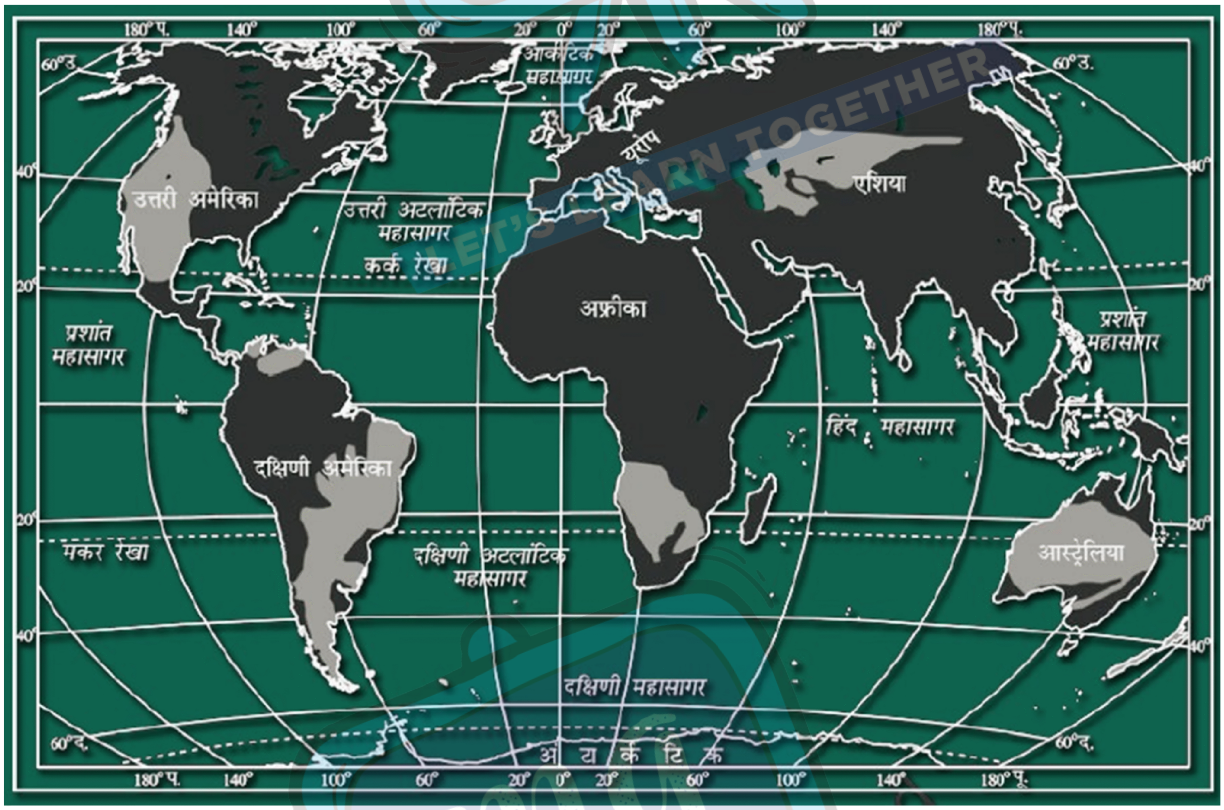
वाणिज्य पशुधन पालन की विशेषताएँ

- चलवासी पशुचारण की अपेक्षा वाणिज्य पशुधन पालन अधिक व्यवस्थित एवं पूँजी प्रधान है।
- वाणिज्य पशुधन पालन पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित है एवं फार्म भी स्थायी होते हैं।
- चराई को नियंत्रित करने के लिए इन्हें बाड़ लगाकर एक दूसरे से अलग कर दिया जाता है।
- यह एक विशिष्ट गतिविधि है, जिसमें केवल एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं।
- प्रमुख पशुओं में भेड़, बकरी, गाय-बैल एवं घोड़े हैं।
- इनसे प्राप्त मांस, खालें एवं ऊन को वैज्ञानिक ढंग से संसाधित एवं डिब्बा बंद कर विश्व के बाजारों में निर्यात कर दिया जाता है।
- पशुफार्म में पशुधन पालन वैज्ञानिक आधार पर व्यवस्थित किया जाता है।
- इसमें मुख्य ध्यान पशुओं के प्रजनन, जननिक सुधार, बीमारियों पर नियंत्रण एवं उनके स्वास्थ्य पर दिया जाता है।

LET'S LEARN TOGETHER

विश्व के प्रमुख क्षेत्र

- न्यूजीलैंड
- आस्ट्रेलिया
- अर्जेंटाइना
- युरुग्वे
- संयुक्त राज्य अमेरिका



Download MISSION GYAN App Now from Play Store

कृषि













LET'S LEARN TOGETHER

विश्व की प्रमुख कृषि प्रणालियाँ

1- निर्वाह कृषि
2- आदिकालीन निर्वाह कृषि
3- गहन निर्वाह कृषि
4- रोपण कृषि
5- विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
6- मिश्रित कृषि
7- डेरी कृषि
8- भूमध्य सागरीय कृषि
9- उद्यान कृषि
10- सहकारी कृषि
11- सामूहिक कृषि

निर्वाह कृषि

- इस प्रकार की कृषि में कृषि क्षेत्र में रहने वाले स्थानीय उत्पादों का संपूर्ण अथवा लगभग का उपयोग करते हैं।

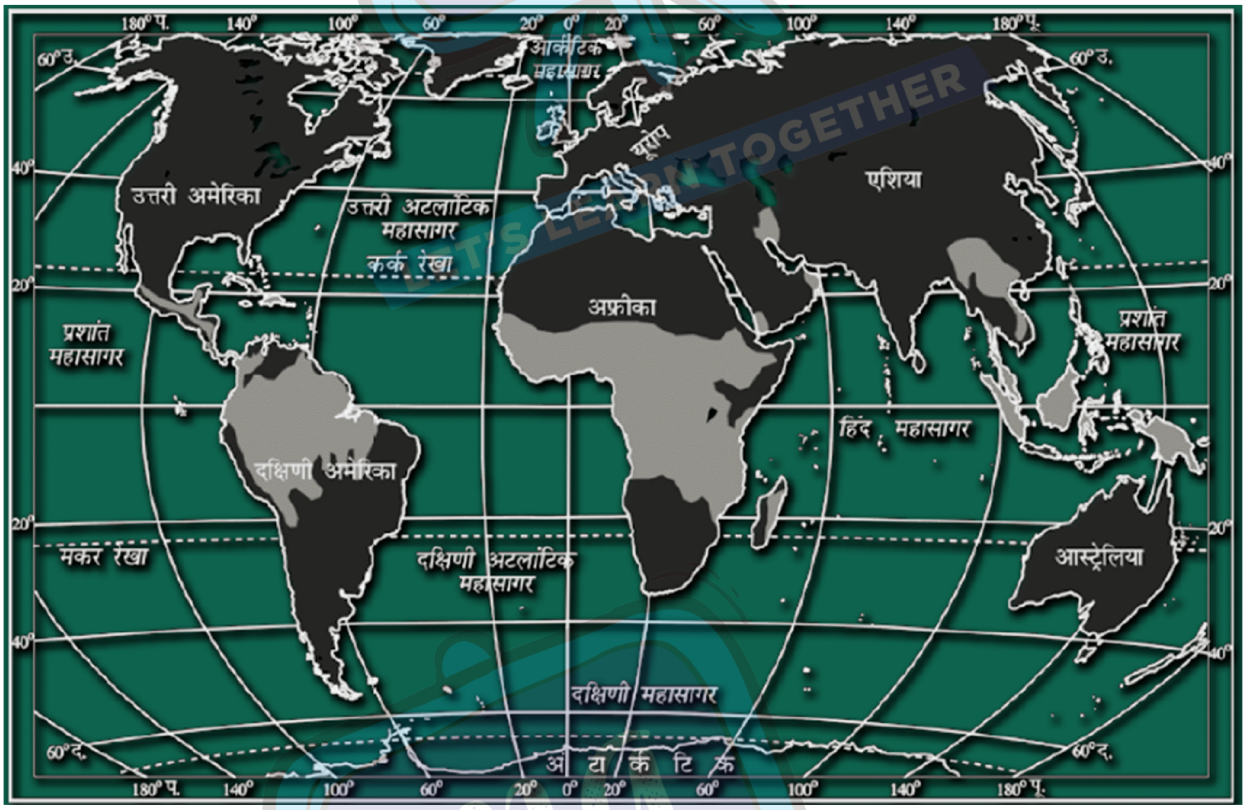
LET'S LEARN TOGETHER

आदिकालीन निर्वाह कृषि

- आदिकालीन निर्वाह कृषि अथवा स्थानांतरणशील कृषि कार्य उष्णकटिबंधीय क्षेत्रें में किया जाता हैं।

प्रमुख क्षेत्र

- अफ्रीका, दक्षिणी एवं मध्य अमेरिका का उष्णकटिबंधीय भाग एवं दक्षिणी पूर्वी एशिया।



Download MISSION GYAN App Now from Play Store

प्रमुख विशेषताएँ





- सर्वप्रथम इन क्षेत्रों की वनस्पति को काटा जाता है फिर उसे जला दिया जाता है एवं जली हुई राख की परत उर्वरक का कार्य करती है।
- इस प्रकार स्थानांतरणशील कृषि कर्तन एवं दहन कृषि भी कहलाती है।
- इसमें बोए गए खेत बहुत छोटे-छोटे होते हैं एवं खेती भी पुराने औजार जैसे लकड़ी, कुदाली एवं फावड़े द्वारा की जाती है।
- कुछ समय पश्चात् (3 से 5 वर्ष) जब मिट्टी का उपजाऊपन समाप्त हो जाता है, तब कृषक नए क्षेत्र में वन जलाकर कृषि के लिए भूमि तैयार करता है।
- कुछ समय पश्चात् कृषक वापस पहले वाले कृषि क्षेत्र पर कृषि कार्य करने आ जाता है।
- इस कृषि कार्य में सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस क्षेत्र में भूमि की उर्वरता कम होती जाती है जिससे झूम का चक्र (आग लगाकर कृषि क्षेत्र तैयार करना) छोटा होता

अनेक नाम

- भारत के उत्तरी पूर्वी राज्यों - झूमिंग
- मध्य अमेरिका एवं मैक्सिको -मिल्पा
- मलेशिया व इंडोनेशिया - लादांग
- वियतनाम - रे
- राजस्थान - वालरा

गहन निर्वाह कृषि

- इस प्रकार की कृषि मानसून एशिया के घने बसे देशों में की जाती है।

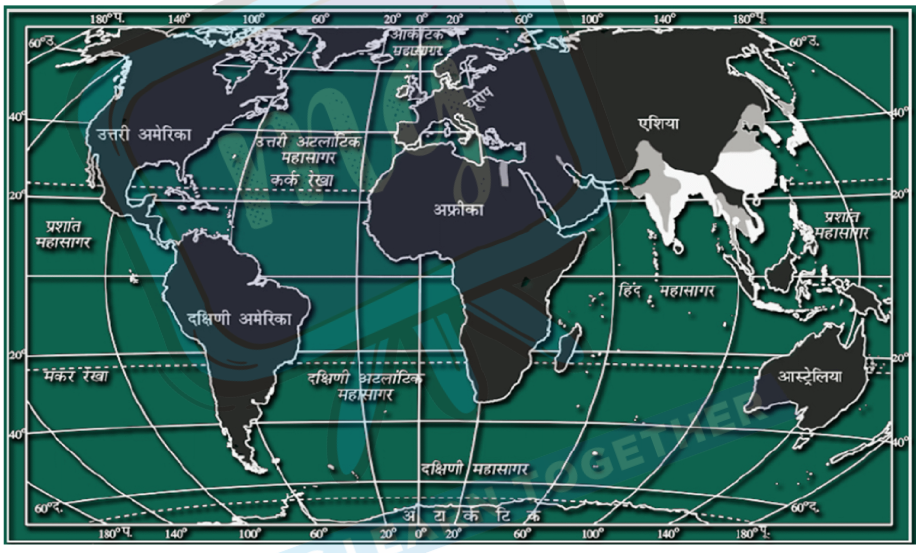
(i) चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि

- इसमें चावल प्रमुख फसल होती है।
- अधिक जनसंख्या घनत्व के कारण खेतों का आकार छोटा होता है एवं कृषि कार्य में कृषक का संपूर्ण परिवार लगा रहता है।
- भूमि का गहन उपयोग होता है एवं यंत्रें की अपेक्षा मानव श्रम का अधिक महत्त्व है।
- उर्वरता बनाए रखने के लिए पशुओं के गोबर की खाद एवं हरी खाद का उपयोग किया जाता है।
- इस कृषि में प्रति इकाई उत्पादन अधिक होता है, परंतु प्रति कृषक उत्पादन कम है।

प्रमुख विशेषताएँ

(ii) चावल रहित गहन निर्वाह कृषि

- मानसून एशिया के अनेक भागों में उच्चावच, जलवायु, मृदा तथा अन्य भौगोलिक कारकों की भिन्नता के कारण धान की फसल उगाना प्रायः संभव नहीं है।
- उत्तरी चीन, मंचूरिया, उत्तरी कोरिया एवं उत्तरी जापान में गेहूँ, सोयाबीन, जौ आदि बोया जाता है।
- भारत में सिंध-गंगा के मैदान के पश्चिमी भाग में गेहूँ एवं दक्षिणी व पश्चिमी शुष्क प्रदेश में ज्वार-बाजरा प्रमुख रूप से उगाया जाता है।
- इस कृषि की अधिकतर विशेषताएँ वो ही है जो चावल प्रधान कृषि की हैं। केवल अंतर यह है कि इसमें सिंचाई की जाती है।



रोपण कृषि

- यूरोपीय लोगों ने विश्व के अनेक भागों का औपनिवेशीकरण किया तथा कृषि के कुछ अन्य रूपों की शुरुआत की जैसे रोपण कृषि, जो वृहद् स्तरीय लाभोन्मुख उत्पादन प्रणाली है।



- यूरोपीय उपनिवेशों ने अपने अधीन उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रें में चाय, कॉफी, कोको, रबड़, कपास, गन्ना, केले एवं अनन्नास की पौध लगाई।

LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख विशेषताएँ

- कृषि क्षेत्र का आकार बहुत विस्तृत होता है।
- इसमें अधिक पूँजी निवेश, उच्च प्रबंध एवं तकनीकी आधार एवं वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है।
- यह एक फसली कृषि है जिसमें किसी एक फसल के उत्पादन पर ही सकेंद्रण किया जाता है।
- श्रमिक सस्ते मिल जाते हैं एवं यातायात विकसित होता है जिसके द्वारा बागान एवं बाजार सुचारु रूप से जुड़े रहते हैं।
- फ्रांसवासियों ने पश्चिमी अफ्रीका में कॉफी एवं कोकोआ के पौधे लगाये थे।
- ब्रिटेनवासियों ने भारत एवं श्रीलंका में चाय के बाग, मलेशिया में रबड़ के बाग एवं पश्चिमी द्वीप समूह में गन्ना एवं केले के बाग विकसित किए।
- स्पेन एवं अमेरिकावासियों ने फिलीपाइंस में नारियल व गन्ने के बागान लगाए।



- इंडोनेशिया में एक समय गन्ने की कृषि में हॉलैंडवासियों (डचों) का एकाधिकार था।
- ब्राजील में अभी भी कुछ कॉफी के बागान जिन्हें फेजेंडा कहा जाता है यूरोपवासियों के नियंत्रण में है।

विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि

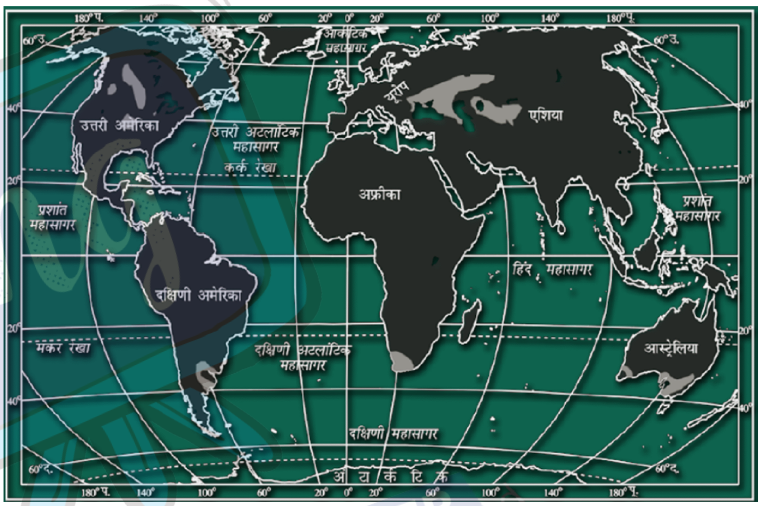
- मध्य अक्षांशों के आंतरिक अर्ध शुष्क प्रदेशों में इस प्रकार की कृषि की जाती है। इसकी मुख्य फसल गेहूँ है।
- यद्यपि अन्य फसलें जैसे मक्का, जौ, राई एवं जई भी बोई जाती है। इस कृषि में खेतों का आकार बहुत बड़ा होता है एवं खेत जोतने से फसल काटने तक सभी कार्य यंत्रें द्वारा संपन्न किए जाते हैं।



- इसमें प्रति एकड़ उत्पादन कम होता है परंतु प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक होता है।

कृषि का क्षेत्र

- यूरेशिया के स्टेपीज, उत्तरी अमेरिका के प्रेयरीज, अर्जेंटाइना के पंपाज, दक्षिणी अफ्रीका के वेल्डस, आस्ट्रेलिया के डाउंस एवं न्यूजीलैंड के केंटरबरी के मैदान।



LET'S LEARN TOGETHER

मिश्रित कृषि

- इस प्रकार की कृषि विश्व के अत्यधिक विकसित भागों में की जाती है।
- इस कृषि में खेतों का आकार मध्यम होता है।
- इसमें बोई जाने वाली फसलें गेहूँ, जौ, राई, जई, मक्का, चारे की फसल एवं कंद-मूल प्रमुख हैं।
- चारे की फसलें मिश्रित कृषि के मुख्य घटक हैं।
- फसल उत्पादन एवं पशुपालन दोनों को इसमें समान महत्त्व दिया जाता है। फसलों के साथ पशुओं जैसे - मवेशी, भेड़, सुअर एवं कुक्कुर आय के मुख्य स्रोत हैं।
- शस्यावर्तन एवं अंतः फसली कृषि मृदा की उर्वरता को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- विकसित कृषि यंत्र, इमारतों, रासायनिक एवं वनस्पति खाद (हरी खाद) के गहन उपयोग आदि पर अधिक पूँजी व्यय के साथ ही कृषकों की कुशलता और योग्यता मिश्रित कृषि की मुख्य विशेषताएँ हैं।



डेरी कृषि



डेरी व्यवसाय दुधारु पशुओं के पालन-पोषण का सर्वाधिक उन्नत एवं दक्ष प्रकार है। इसमें पूँजी की भी अधिक आवश्यकता होती है।

पशुओं के लिए छप्पर, घास संचित करने के भंडार एवं दुग्ध उत्पादन में अधिक यंत्रों के प्रयोग के लिए पूँजी भी अधिक चाहिए।

पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन एवं पशु चिकित्सा पर भी अधिक ध्यान दिया जाता है। इसमें गहन श्रम की आवश्यकता होती है। पशुओं को चराने, दूध निकालने आदि कार्यों के लिए वर्ष भर श्रम की आवश्यकता रहती है। क्योंकि फसलों की तरह इनमें कोई अंतराल नहीं होता जिसमें श्रम की आवश्यकता न हो।

डेरी कृषि का कार्य नगरीय एवं औद्योगिक केंद्रों के समीप किया जाता है, क्योंकि ये क्षेत्र ताजा दूध एवं अन्य डेरी उत्पाद के अच्छे बाजार होते हैं वर्तमान समय में विकसित यातायात के साधन, प्रशीतकों का उपयोग, पास्तेरीकरण की सुविधा के कारण विभिन्न डेरी उत्पादों को अधिक समय तक रखा जा सकता है।

LET'S LEARN TOGETHER

वाणिज्य डेरी कृषि के प्रमुख क्षेत्र

1- सबसे बड़ा प्रदेश उत्तरी पश्चिमी यूरोप

2- कनाडा

3- न्यूजीलैंड, दक्षिणी पूर्वी आस्ट्रेलिया एवं तस्मानिया।



भूमध्यसागरीय कृषि

भूमध्यसागरीय कृषि अति विशिष्ट प्रकार की कृषि है।

विशेषताएँ

- खट्टे फलों की आपूर्ति करने में यह क्षेत्र महत्त्वपूर्ण है।
- अंगूर की कृषि भूमध्यसागरीय क्षेत्र की विशेषता है। इस क्षेत्र के कई देशों में अच्छे किस्म के अंगूरों से उच्च गुणवत्ता वाली मदिरा का उत्पादन किया जाता है। निम्न श्रेणी के अंगूरों को सुखाकर मुनक्का एवं किशमिश बनाई जाती है।
- अंजीर एवं जैतून भी यहाँ उत्पन्न होता है।

LET'S LEARN TOGETHER

- शीत ऋतु में जब यूरोप एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में फलों एवं सब्जियों की माँग होती है तब इसी क्षेत्र से पूर्ति की जाती है।

क्षेत्र :- इसका विस्तार भूमध्यसागर के समीपवर्ती क्षेत्र जो दक्षिणी यूरोप से उत्तरी अफ्रीका में ट्यूनीशिया से एटलांटिक तट तक फैला है।



अन्य क्षेत्र

1- दक्षिणी कैलीफोर्निया
2- मध्यवर्ती चिली
3- दक्षिणी अफ्रीका का दक्षिणी पश्चिमी भाग
4- आस्ट्रेलिया के दक्षिण व दक्षिण पश्चिम भाग।

बाजार के लिए सब्जी खेती एवं उद्यान कृषि

विशेषताएँ :-इस प्रकार की कृषि में अधिक मुद्रा मिलने वाली फसलें जैसे सब्जियाँ, फल एवं पुष्प लगाए जाते हैं जिनकी माँग नगरीय क्षेत्रें में होती है।

- इस कृषि में खेतों का आकार छोटा होता है एवं खेत अच्छे यातायात साधनों के द्वारा नगरीय केंद्रों जहाँ उच्च आय वाले उपभोक्ता रहते हैं।
- इसमें गहन श्रम एवं अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त सिंचाई, उर्वरक, अच्छी किस्म के बीज, कीटनाशी, हरित गृह एवं शीत क्षेत्रों में कृत्रिम ताप का भी इस कृषि में उपयोग होता है।

क्षेत्र : उत्तरी पश्चिमी यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी पूर्वी भाग एवं भूमध्यसागरीय प्रदेश में अधिक विकसित है, जहाँ औद्योगिक क्षेत्रें में जनसंख्या घनत्व अधिक है।

- नीदरलैंड पुष्प उत्पादन में विशिष्टीकरण रखता है। यहाँ से बागबानी फसल विशेषतः ट्यूलिप (एक प्रकार का फूल) पूरे यूरोप के प्रमुख शहरों में भेजा जाता है।



ट्रक कृषि :



जिन प्रदेशों में कृषक केवल सब्जियाँ पैदा करता है वहाँ इसको 'ट्रक कृषि' का नाम दिया जाता है। ट्रक फार्म एवं बाजार के मध्य की दूरी, जो एक ट्रक रात भर में तय करता है, उसी आधार पर इसका नाम ट्रक कृषि रखा गया है।

कारखाना कृषि :

- पश्चिमी यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका के औद्योगिक क्षेत्रें में कारखाना कृषि भी की जाती है।





- इसमें पशुधन पाला जाता है जिनमें विशेषतः गाय-बैल एवं कुक्कुर होते हैं। इन्हें बाड़े पर कारखानों में तैयार बने बनाए भोजन पर रखा जाता है, एवं उनकी बीमारियों का भी ध्यान रखा जाता है।
- इसमें भवन निर्माण, यंत्र खरीदने, प्रकाश एवं ताप की व्यवस्था करने एवं पशु चिकित्सा के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता होती है।
- अच्छी नस्ल का चुनाव और प्रजनन की वैज्ञानिक विधियों द्वारा पशुपालन किया जाता है।

LET'S LEARN TOGETHER

सहकारी कृषि

- जब कृषकों का एक समूह अपनी कृषि से अधिक लाभ कमाने के लिए स्वेच्छा से एक सहकारी संस्था बनाकर कृषि कार्य संपन्न करे उसे सहकारी कृषि कहते हैं।
- सहकारी संस्था कृषकों को सभी रूप में सहायता करती है।
- यह सहायता कृषि कार्य में आने वाली सभी चीजों की खरीद करने, कृषि उत्पाद को उचित मूल्य पर बेचने एवं सस्ती दरों पर प्रसंस्कृत साधनों को जुटाने के लिए होती है।
- सहकारी आंदोलन एक शताब्दी पूर्व प्रारंभ हुआ था एवं पश्चिमी यूरोप के डेनमार्क, नीदरलैंड, बेल्जियम, स्वीडन एवं इटली में यह सफलतापूर्वक चला।
- सबसे अधिक सफलता इसे डेनमार्क में मिली जहाँ प्रत्येक कृषक इसका सदस्य है।
- डेनमार्क में यह आंदोलन सर्वाधिक सफल रहा, जहाँ व्यावहारिक रूप से प्रत्येक कृषक इस आंदोलन का सदस्य है।

LET'S LEARN TOGETHER

सामूहिक कृषि

- इस प्रकार की कृषि का आधारभूत सिद्धांत यह होता है कि इसमें उत्पादन के साधनों का स्वामित्व संपूर्ण समाज एवं सामूहिक श्रम पर आधारित होता है।
- कृषि का यह प्रकार पूर्व सोवियत संघ में प्रारंभ हुआ था जहाँ कृषि की दशा सुधारने एवं उत्पादन में वृद्धि व आत्मनिर्भरता प्राप्ति के लिए सामूहिक कृषि प्रारंभ की गई।
- इस प्रकार की सामूहिक कृषि को सोवियत संघ में कोलखहोज का नाम दिया गया।
- सभी कृषक अपने संसाधन जैसे भूमि, पशुधन एवं श्रम को मिलाकर कृषि कार्य करते थे। ये अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भूमि का छोटा-सा भाग अपने अधिकार में भी रखते थे।



LET'S LEARN TOGETHER

खनन

- प्राचीन काल में खनिजों का उपयोग औजार बनाने, बर्तन बनाने एवं हथियार बनाने तक ही सीमित था। इसका वास्तविक विकास औद्योगिक क्रांति के पश्चात् ही संभव हुआ एवं निरंतर इसका महत्त्व बढ़ता रहा है।



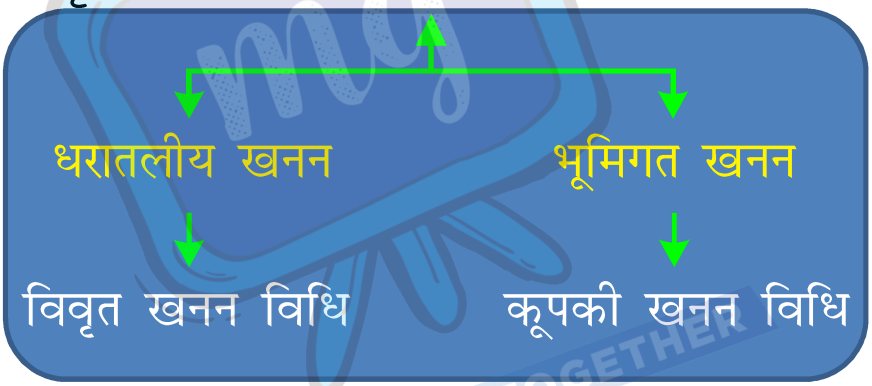
खनन कार्य को प्रभावित करने वाले कारक

1- भौतिक कारक : जिनमें खनिज निक्षेपों के आकार, श्रेणी एवं उपस्थिति की अवस्था को सम्मिलित करते हैं।

2- आर्थिक कारक : जिनमें खनिज की माँग, विद्यमान तकनीकी ज्ञान एवं उसका उपयोग, अवसंरचना के विकास के लिए उपलब्ध पूँजी एवं यातायात व श्रम पर होने वाला व्यय आता है।

खनन की विधियाँ –

उपस्थिति की अवस्था एवं अयस्क की प्रकृति के आधार पर खनन के प्रकार



LET'S LEARN TOGETHER

विवृत खनन

- धरातलीय खनन को विवृत खनन भी कहा जाता है।
- खनिज जो कम गहराई में स्थित है वे पृष्ठीय स्तर को हटाकर निकाले जाते हैं, उसे विवृत खनन कहते हैं।
- यह खनिजों के खनन का सबसे सस्ता तरीका है, क्योंकि इस विधि में सुरक्षात्मक पूर्वोपायों एवं उपकरणों पर अतिरिक्त खर्च अपेक्षाकृत कम होता है एवं उत्पादन शीघ्र व अधिक होता है।



कूपकी खनन

- जब अयस्क धरातल के नीचे गहराई में होता है तब भूमिगत अथवा कूपकी खनन विधि का प्रयोग किया जाता है।



- इस विधि में लंबवत् कूपक गहराई तक स्थित हैं, जहाँ से भूमिगत गैलरियाँ खनिजों तक पहुँचने के लिए फैली हैं।



- इन मार्गों से होकर खनिजों का निष्कर्षण एवं परिवहन धरातल तक किया जाता है।

LET'S LEARN TOGETHER

- खदान में कार्य करने वाले श्रमिकों तथा निकाले जाने वाले खनिजों के सुरक्षित और प्रभावी आवागमन हेतु इसमें विशेष प्रकार की लिफ्ट बेधक (बरमा), माल ढोने की गाड़ियाँ तथा वायु संचार प्रणाली की आवश्यकता होती है।
- खनन का यह तरीका जोखिम भरा है क्योंकि जहरीली गैसें, आग एवं बाढ़ के कारण कई बार दुर्घटनाएँ होने का भय रहता है।
- विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश उत्पादन की खनन, प्रसंस्करण एवं शोधन कार्य से पीछे हट रहे हैं क्योंकि इसमें श्रमिक लागत अधिक आने लगी है।
- जबकि विकासशील देश अपने विशाल श्रमिक शक्ति के बल पर अपने देशवासियों के ऊँचे रहन-सहन को बनाए रखने के लिए खनन कार्य को महत्त्व दे रहे हैं।
- अफ्रीका के कई देश, दक्षिण अमेरिका के कुछ देश एवं एशिया में आय के साधनों का पचास प्रतिशत तक खनन कार्य से प्राप्त होता है।

LET'S LEARN TOGETHER